छहढाला

तीसरी ढाल

मुक्तिमार्ग का पहला चरण:
सम्यग्दर्शन - स्वरूप एवं महिमा

www.JainKosh.org

fppt.com

तीसरी ढाल की विषय वस्तु

छन्द	विषय वस्तु
1 – 2	मोक्षमार्ग, निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का वर्णन
3	व्यवहार सम्यग्दर्शन का वर्णन
4 – 10	७ तत्त्वों के स्वरूप का वर्णन
10	देव-गुरु-धर्म का वर्णन
11 - 14	सम्यक्त्व के गुण-दोष और उनके ग्रहण-त्याग का उपदेश
15	सम्यग्दृष्टी जीव की दशा और महिमा
16	सम्यग्दर्शन की महिमा
17	मोक्षमहल की प्रथम सीढ़ी सम्यग्दर्शन

www.JainKosh.org

fppt.com

आतम को हित है सुख सो सुख आकुलता बिन कहिये।
आकुलता शिवमांहि न तातैं, शिवमग लाग्यो चहिये॥
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव मग, सो द्विविध विचारो।
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय,कारण सो व्यवहारो॥1॥

- आतम को=आत्मा का
- हित =कल्याण
- सुख =सुख की प्राप्ति
- सो सुख= वह सुख
- आकुलता बिन= आकुलता रहित
- कहिये= कहा जाता है ।
- शिवमाहिं= मोक्ष में
- तातैं= इसलिये
- शिवमग =मोक्षमार्ग में
- लाग्यो= लगना

www.JainKosh.org

fppt.com

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव मग, सो द्विविध विचारो ।
जो सत्यारथ-रूप सो निश्चय,कारण सो व्यवहारो ॥1॥

- सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन= सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र इन तीनों की एकता रूप
- शिवमग= जो मोक्ष का मार्ग
- सो= उस मोक्षमार्ग का
- द्विविध =दो प्रकार से
- विचारो =विचार करना चाहिए
- सत्यारथ रूप= वास्तविक स्वरूप
- सो= वह
- कारण= निमित्तकारण
- व्यवहारो= व्यवहार-मोक्षमार्ग ।

www.JainKosh.org

fppt.com

आत्मा का हित सुख है

सुख निराकुलता में है

मोक्ष में आकुलता नहीं है

इसीलिये मोक्षमार्ग में लगना चाहिये

मोक्षमार्ग सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र की एकता रूप है

यह मोक्षमार्ग दो प्रकार विचारना चाहिये

निश्चय मोक्षमार्ग सत्यार्थ है

व्यवहार मोक्षमार्ग उसका कारण है

आत्मा का हित
सुख है

सुख निराकुलता
में है

निराकुलता मोक्ष
में है

www.JainKosh.org

मोक्ष क्या है?

मुक्ति ही मोक्ष है

- संसार से मुक्ति
- दुखों से मुक्ति
- कर्मों से मुक्ति

मोक्ष = मुञ्चति इति मोक्ष

www.JainKosh.org

fppt.com

मोक्ष कहाँ पर स्थित है?

निश्चय से

- आत्मा में ही है
- क्योंकि संपूर्ण विकार रहित अवस्था का नाम मोक्ष है

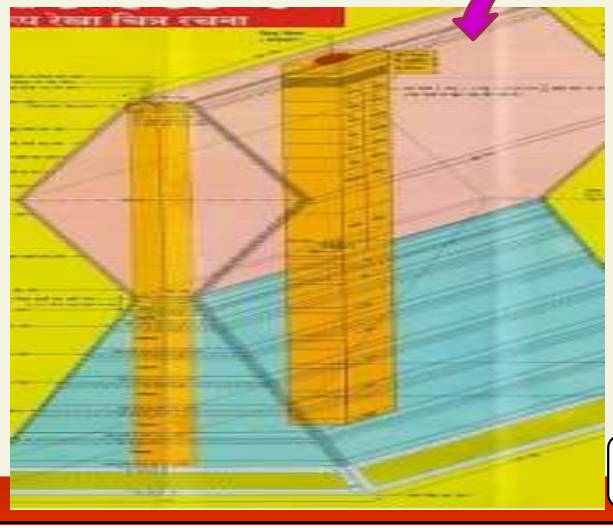

व्यवहार से

- लोक के अग्र भाग में ईषत प्राग्भार पृथ्वी पर
- 45 लाख योजन प्रमाण वाली सिद्ध शिला के ऊपर
- तनु वातवलय के अन्त में

www.JainKosh.org

fppt.com

मोक्षमार्ग क्या है?

मोक्ष के मार्ग पर चलकर ।

मोक्ष कैसे प्राप्त होगा?

सम्यग्दर्शन + सम्यग्ज्ञान + सम्यग्चारित्र = मोक्ष मार्ग

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन शिव मग

शिव मग, सो द्विविध विचारो

मोक्षमार्ग का निरूपण

- निश्चय
- व्यवहार

मोक्षमार्ग 2
प्रकार का नहीं
है, उसका कथन
2 प्रकार से है

नय

नय	• वस्तु के एकदेश को जानने वाला ज्ञान
निश्चय नय	• वस्तु के यथार्थ स्वरूप को निरूपित करने वाला ज्ञान
व्यवहार नय	• वस्तु के उपचरित या भेद को निरूपित करने वाला ज्ञान

www.JainKosh.org

fppt.com

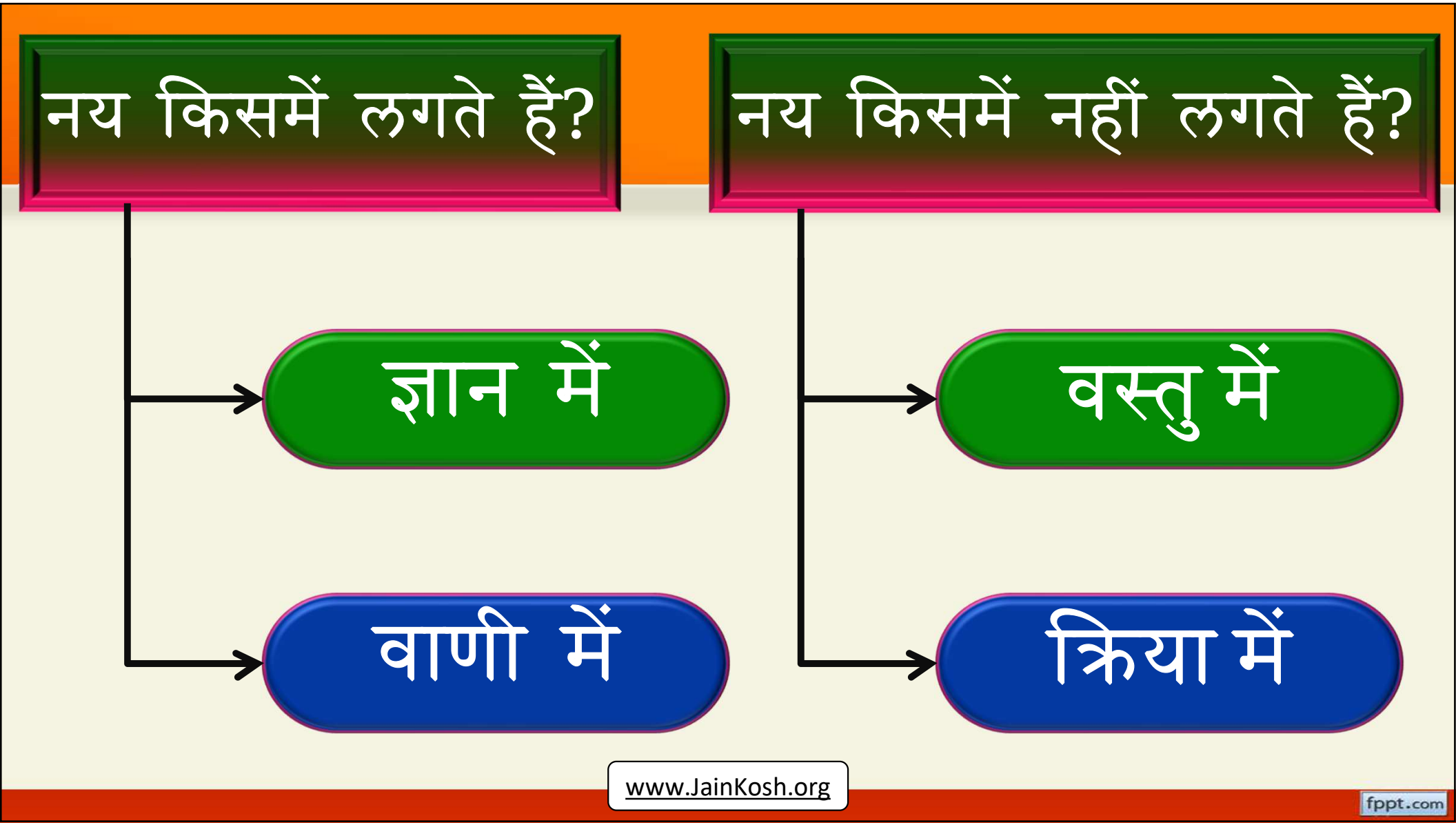

नय किसमें लगते हैं?

- ज्ञान में
- वाणी में

नय किसमें नहीं लगते हैं?

- वस्तु में
- क्रिया में

fppt.com

व्यवहार मोक्षमार्ग

जो निश्चय मोक्षमार्ग का कारण है

निश्चय मोक्षमार्ग

जो मोक्षमार्ग यथार्थ है एवं साक्षात मोक्ष का कारण है

www.JainKosh.org

निश्चय मोक्षमार्ग

- निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की एकता रूप

व्यवहार मोक्षमार्ग

- सर्वज्ञकथित सप्त तत्त्व, सच्चे देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा, जिनवाणी का ज्ञान, तथा मन्दकषायरूप शुभभाव

www.JainKosh.org

क्या व्यवहार मोक्षमार्ग निश्चय मोक्षमार्ग है?

नहीं

क्या व्यवहार मोक्षमार्ग के बिना निश्चय मोक्षमार्ग हो सकता है?

नहीं

www.JainKosh.org

निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र का स्वरूप

www.JainKosh.org

fppt.com

परद्रव्यनतैं भिन्न आपमें, रुचे सम्यक्त्व भला है ।
आपरूप को जानपनों, सो सम्यग्ज्ञान कला है ॥
आपरूप में लीन रहे थिर, सम्यक्चारित सोई ।
अब व्यवहार मोक्षमग सुनिये, हेतु नियत को होई॥2॥

- परद्रव्यनतैं= परवस्तुओं से
- आप में= आत्मा में
- रुचि= श्रद्धा करना
- सम्यक्त्व= सम्यग्दर्शन
- भला= निश्चय
- आपरूप को= आत्मा के स्वरूप को
- जानपनों=जानना
- सो= वह
- सम्यग्ज्ञान= निश्चय सम्यग्ज्ञान
- कला= प्रकाश

www.JainKosh.org

fppt.com

आपरूप में लीन रहे थिर, सम्यक्चारित सोई ।
अब व्यवहार मोक्षमग सुनिये, हेतु नियत को होई॥2॥

- लीन रहे= लीन होना
- थिर= स्थिरतापूर्वक
- सम्यक्चारित= निश्चय सम्यक्चारित्र
- सोई =है
- व्यवहार मोक्षमग= व्यवहार-मोक्षमार्ग
- सुनिये=सुनो
- हेतु=निमित्तकारण
- नियत को= निश्चय-मोक्षमार्ग का

www.JainKosh.org

fppt.com

दर्शन, ज्ञान, चारित्र?

www.JainKosh.org

परद्रव्यनतैं भिन्न आपमें, रुचि सम्यक्त्व भला है

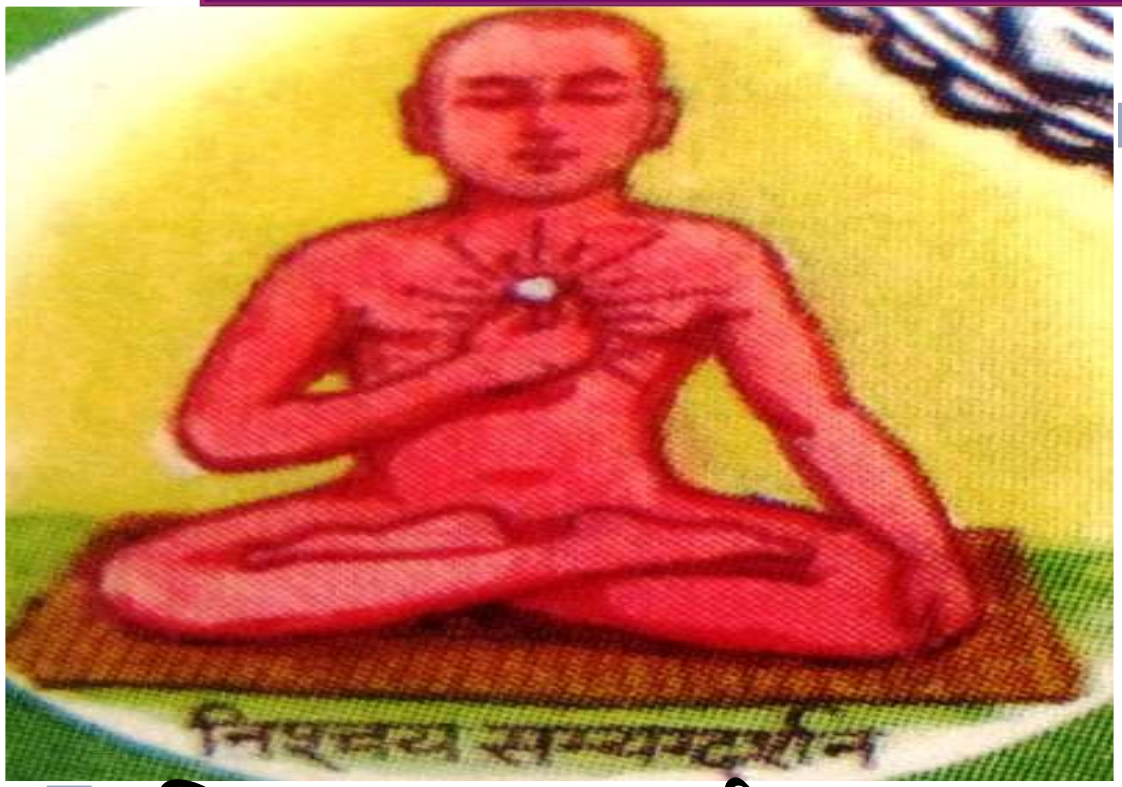

निश्चय सम्यग्दर्शन

पर पदार्थों से त्रिकाल भिन्न ऐसे निज-आत्मा का अटल विश्वास करना

www.JainKosh.org

आपरूप को जानपनों, सो सम्यग्ज्ञान कला है॥

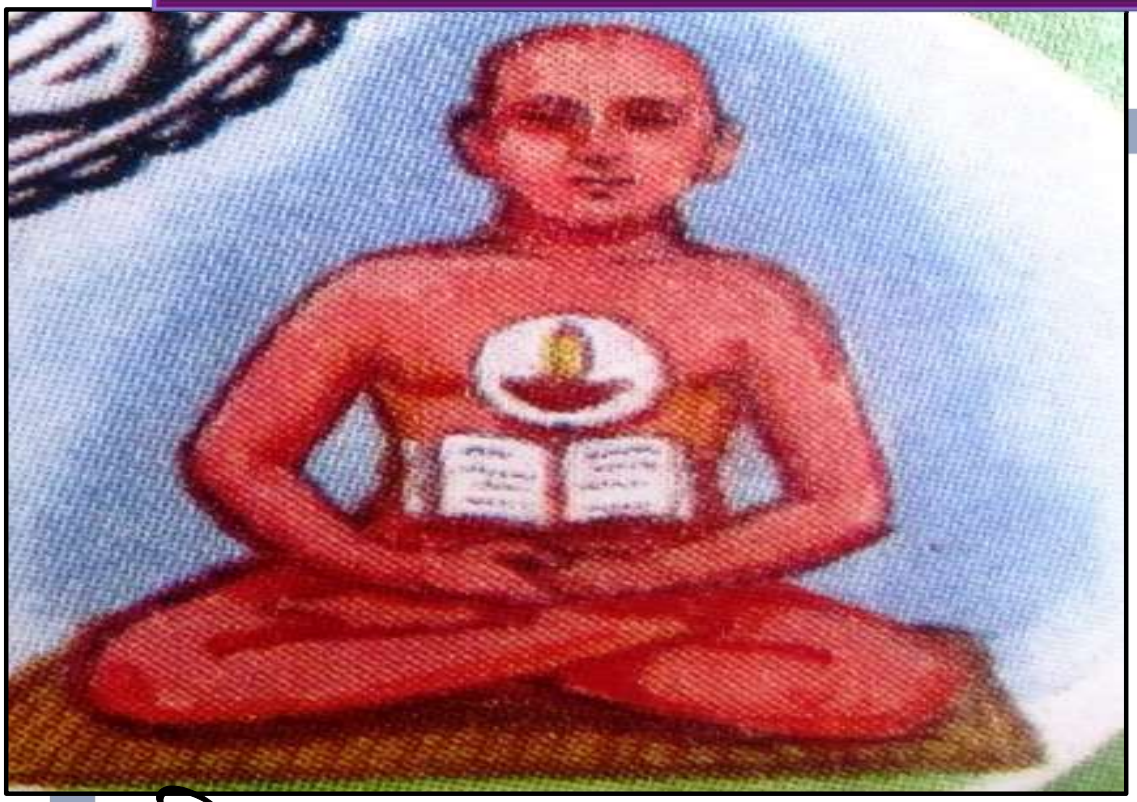

निश्चय सम्यग्ज्ञान

आत्मा को पर-वस्तुओं से भिन्न जानना

www.JainKosh.org

आपरूप में लीन रहे थिर, सम्यक्चारित सोई।

निश्चय सम्यक्चारित्र

परद्रव्यों का आलम्बन छोड़कर आत्मस्वरूप में एकाग्रता से मग्न होना

www.JainKosh.org

अब व्यवहार मोक्षमग सुनिये, हेतु नियत को होई॥2॥

अब आगे व्यवहार-मोक्षमार्ग का कथन करते हैं; जो कि निश्चय मोक्षमार्ग का कारण होता है|

www.JainKosh.org

fppt.com

व्यवहार सम्यग्दर्शन का स्वरूप

www.JainKosh.org

fppt.com

जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बन्ध रु संवर जानो।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको, ज्यों का त्यों सरधानो॥
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानो।
तिनको सुन सामान्य विशेषैं, दिढ़ प्रतीत उर आनो॥3॥

- जिन= जिनेन्द्रदेव ने
- अरु= और
- ज्यों का त्यों= यथार्थरूप से
- सरधानो= श्रद्धा करो
- सोई= इसप्रकार श्रद्धा करना
- समकित व्यवहारी= व्यवहार सम्यग्दर्शन
- इन रूप= इन सात तत्त्वों का
- बखानो= वर्णन करते हैं;
- तिनको= उन्हें
- सामान्य विशेषैं= संक्षेप से तथा विस्तार से
- दिढ़= अटल
- प्रतीत= श्रद्धा
- उर= मन में
- आनो= करो ।

www.JainKosh.org

fppt.com

जीव अजीव तत्त्व अरु आस्रव, बन्ध रु संवर जानो।
निर्जर मोक्ष कहे जिन तिनको, ज्यों का त्यों सरधानो॥
है सोई समकित व्यवहारी, अब इन रूप बखानो।
तिनको सुन सामान्य विशेषैं, दिढ़ प्रतीत उर आनो॥3॥

- जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष इन 7 तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान करना व्यवहार सम्यग्दर्शन है ।
- अब इनके स्वरूप का वर्णन करते हैं जिसके सामान्य और विशेषस्वरूप को समझकर दृढ़ निश्चय करों।

fppt.com

निश्चयश्रद्धा सहित इन सात तत्त्वों की श्रद्धा को व्यवहार सम्यग्दर्शन कहते हैं ।

www.JainKosh.org

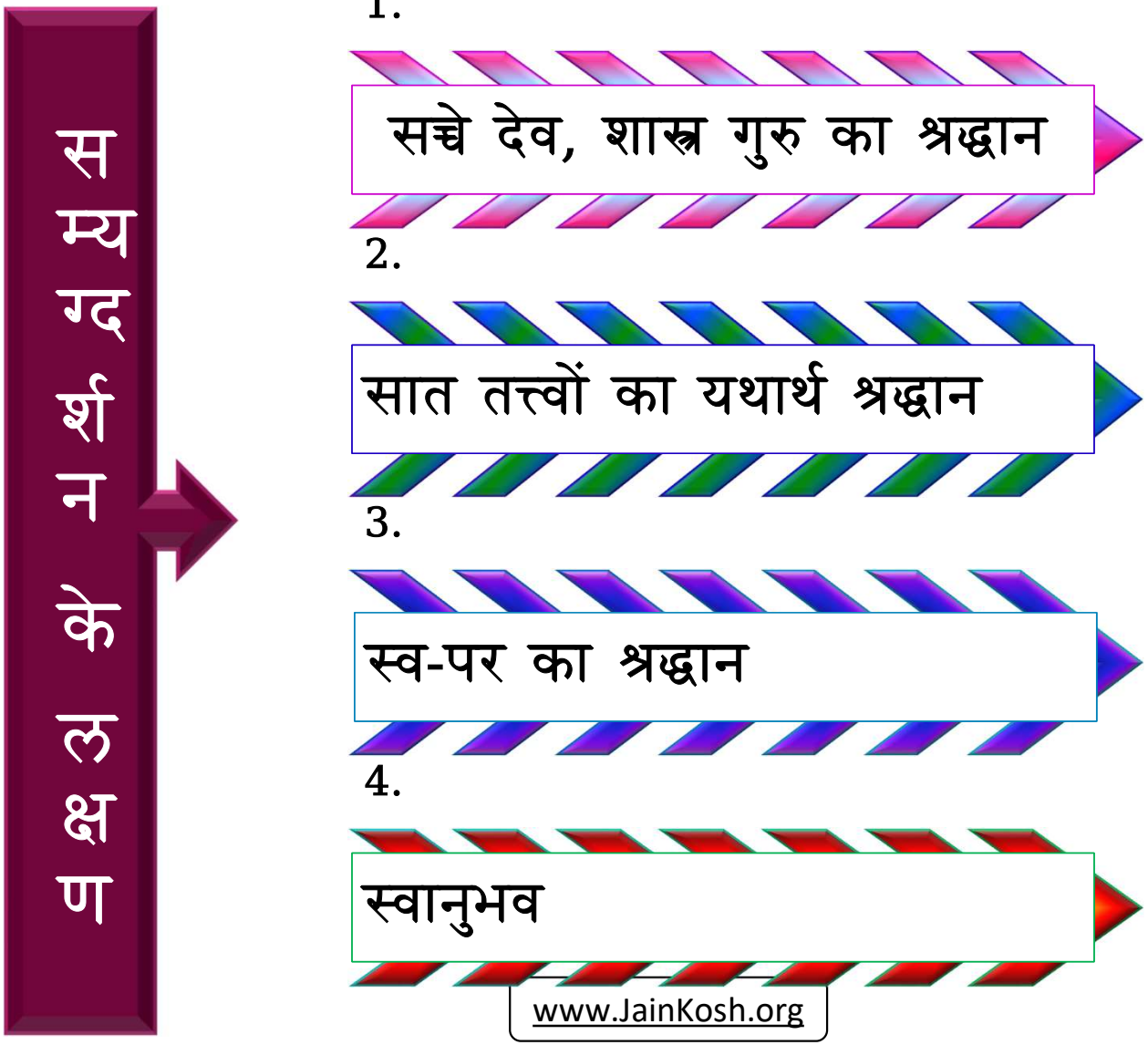

www.JainKosh.org

सम्यग्दर्शन का स्वरूप 4 अनुयोगों में

प्रथमानुयोग, चरणानुयोग के अनुसार	करणानुयोग के अनुसार	द्रव्यानुयोग के अनुसार
सच्चे देव, शास्त्र गुरु का श्रद्धान. 25 दोषों से रहित, 8 अंग सहित	दर्शन मोहनीय व अनंतानुबंधी के क्षय, उपशम या क्षयोपशम से आत्मा की जो निर्मल परिणति है	सात तत्त्वों का यथार्थ श्रद्धान

www.JainKosh.org